

TRAINING PROGRAMMES IN BIOTECHNOLOGY - 2015

Department of Molecular Biology, Biotechnology and Bioinformatics, College of Basic Sciences & Humanities is conducting two training programmes as given under:

1. Molecular Strategies towards Improving Crop Productivity, June 17 to July 7, 2015.
2. Biotechnological Approaches for Complementing Conventional Plant Improvement Methods, June 17 to July 28, 2015.

Director of Research Dr. S.S. Siwach (Chief Guest) inaugurated the training programmes on 17.06.2015 in the Committee Room of College of Basic Sciences & Humanities. Dr. Siwach emphasized the use of genomics, biotechnology and nano-biotechnology for improving the crop productivity and quality. Dr. Siwach said that in rice and wheat, a yield plateau have reached and it is essential to use non-conventional biotechnological tools to break this plateau. We may have to increase the productivity by over 70% by 2050 to feed the ever increasing population in India. Dr. Siwach also described how GM Cotton has increased the productivity and income of the farmers in India.

Dr. R.K. Jain, Dean, College of Basic Sciences & Humanities and Guest of Honor said that it is important to develop human resource in the various fields of biotechnology. He said that India is a country of unlimited brain, genetic diversity, vast resources and manpower and with proper environment, investment and due attention given to science, India has the potential to develop into an economically strong country, a leader in the world in the next two decades.

Dr. Santosh Dhillon, Professor & Head, Department of Molecular Biology, Biotechnology and Bioinformatics and organizer of the training programmes, briefly described the training schedules and said that these training will be very useful for all the participating young students and scientists. Dr. Dhillon apprised the audience that 31 participants (teachers and students) from different colleges/universities are participating in these training programmes. On this occasion various HODs, Faculty of Department of MBBB, CCSHAU and Animal Biotechnology, LUVAS were present. The manuals for the training programme were also released on this occasion.







हरियाणा और राजस्थान के विज्ञानिकों और विद्यार्थियों को प्रशिक्षण शिविर में संबोधित करते अनुसंधान निदेशक डॉ. सिवाच

पैदावार और गुणवत्ता के लिए नैनो और बायो टेक्नोलॉजी जरूरी : डॉ. सिवाच

भास्कर न्यूज़ | हिंसार

हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के अनुसंधान निदेशक डॉ. एसएस सिवाच ने खाद्यान्न उत्पादन बढ़ाने के लिए पौध प्रजनन की पारंपरिक विधियों के साथ जिनोमिक्स, बायोटेक्नोलॉजी और नैनो टेक्नोलॉजी जैसी आधुनिक वैज्ञानिक तकनीकों को उपयोग करने का आह्वान किया है। पैदावार और गुणवत्ता बढ़ाने में जिनोमिक्स, बायोटेक्नोलॉजी और नैनो टेक्नोलॉजी जैसी आधुनिक वैज्ञानिक तकनीकें बहुत उपयोगी

साबित हो सकती हैं। वे बुधवार को विश्वविद्यालय के मालेकुलर बायोलाजी, बायोटेक्नोलॉजी एंड बायोइन्फॉर्मेटिक्स विभाग की ओर से बायोटेक्नोलॉजी तथा मॉलेकुलर टूलज विषयों पर आयोजित दो प्रशिक्षणों के उद्घाटन समारोह पर बतौर मुख्य अतिथि बोल रहे थे।

उन्होंने कहा कि धान तथा गेहूं जैसी मुख्य फसलों का उत्पादन चरम सीमा पर पहुंच चुका है। इसमें और वृद्धि की संभावना लगाना नहीं के समान है। 2050 तक खाद्यान्न की मांग 70 प्रतिशत बढ़ने की

संभावना है। मौलिक विज्ञान कॉलेज के डीन डॉ. आरके जैन ने अध्यक्षीय भाषण देते हुए बायोटेक्नोलॉजी जैसी आधुनिक तकनीकों में मानव संसाधन के विकास पर बल दिया। मेजबान विभाग की अध्यक्ष एवं प्रशिक्षण निदेशिका डॉ. संतोष दिल्ली ने उपरोक्त प्रशिक्षणों की विषय वस्तु पर प्रकाश डाला। इस मौके पर पदों, वीके सिक्का, डॉ. शिखा यशवीर सहित कॉलेज के विभागाध्यक्ष, वैज्ञानिक उपस्थित थे। इस अवसर पर मुख्यातिथि ने पाठ्यक्रम संदेशिका का भी विमोचन किया।

Hisar Bhaskar dated 18.06.2015

मंथन : अत्याधुनिक संसाधनों का इस्तेमाल कर उत्पादन बढ़ाना समय की मांग

आधुनिक तकनीकों के उपयोग पर जोर

जागरण संवाददाता, हिंसार : चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के अनुसंधान निदेशक डॉ. एसएस सिवाच ने खाद्यान्न उत्पादन बढ़ाने के लिए पौध प्रजनन की पारंपरिक विधियों के साथ जिनोमिक्स, बायो टेक्नोलॉजी तथा नैनो टेक्नोलॉजी जैसी आधुनिक वैज्ञानिक तकनीकों को उपयोग करने का आह्वान किया है।

डॉ. सिवाच विश्वविद्यालय के मालेकुलर बायोलाजी, बायो टेक्नोलॉजी एंड बायोइन्फॉर्मेटिक्स विभाग द्वारा बायो टेक्नोलॉजी तथा मॉलेकुलर टूलज विषयों पर आयोजित दो प्रशिक्षणों के उद्घाटन समारोह पर बतौर मुख्य अतिथि बोल रहे थे।

उन्होंने कहा कि धान तथा गेहूं जैसी मुख्य फसलों का उत्पादन चरम सीमा पर पहुंच चुका है, जिसमें और वृद्धि की संभावना लगाना न के समान है जबकि 2050 तक खाद्यान्न की मांग 70 प्रतिशत बढ़ने की संभावना है। दूसरी तरफ घट रही कृषि जोत, रलोबल वार्मिंग, क्षीण हो रही भू-उर्वरता, कृषि रसायनों के अंधाधुंध प्रयोग आदि कृषि उत्पादन के लिए गंभीर चुनौती उत्पन्न कर रहे हैं। ऐसी परिस्थिति में फसलों



मुख्यातिथि डॉ. एसएस सिवाच पाठ्यक्रम संदेशिका का विमोचन करते हुए।

की पैदावार तथा गुणवत्ता बढ़ाने में जिनोमिक्स, बायो टेक्नोलॉजी तथा नैनो टेक्नोलॉजी जैसी आधुनिक वैज्ञानिक तकनीकें बहुत उपयोगी साबित हो सकती हैं। उन्होंने कहा कि हमारा ऐसा प्रयास होना चाहिए ताकि संसाधनों के इस्तेमाल से अधिक पैदावार तथा लाभ प्राप्त हो सके। मौलिक विज्ञान कॉलेज के डीन

डॉ. आरके जैन ने अध्यक्षीय भाषण देते हुए बायो टेक्नोलॉजी जैसी आधुनिक तकनीकों में मानव संसाधन के विकास पर बल दिया। मेजबान विभाग की अध्यक्ष एवं प्रशिक्षण निदेशिका डॉ. संतोष दिल्ली ने उपरोक्त प्रशिक्षणों की विषय वस्तु पर प्रकाश डाला।

Jagran City, dated 18.05.2015